सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से संबद्ध)

33, प्रभांजलि, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती

महासचिव : का. डी. आर. महापात्र

परिपत्र क्र. : 7/2018

दिनांक : 1/05/2018

मध्य क्षेत्र के समस्त साथियों के नाम

प्रिय साथियों ,

विषय : मई दिवस अमर रहे !

मई दिवस के इस अवसर पर सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन की ओर से हम समस्त बीमा कर्मचारियों सहित देश और दुनिया के तमाम मेहनतकश अवाम को लाखों लाख क्रांतिकारी अभिवादन प्रेषित करते हैं।

मई दिवस पर दुनिया के तमाम मजदूरों को शुभकामनाएं देते हुए उस ऐतिहासिक पल को भी अपने जेहन में संजोये रखना जरूरी हो जाता है जब आज से 132 वर्ष पूर्व 1886 में अमेरिका के शिकागो शहर में लाखों लाख मजदूरों ने काम के घंटे की सीमा तय करने के लिए एक और मजदूरों की 8 घंटे के कार्यदिवस की मांग पर संगठित आंदोलन तैयार किया था। इस आंदोलन को कुचलने के लिए पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों के गठजोड़ ने हर हथकंडा अपनाया, जिसका नतीजा था। तीन मजदूर साथियों की शहादत। इस शहादत से मजदूरों के हौसले पस्त नहीं हुए बल्कि बुलंद ही हुए और अंतत: पूंजीपतियों को 8 घंटे कार्य दिवस की मांगें माननी ही पड़ीं। तबसे लेकर अब तक मजदूरों के नित नये संघर्षों के जरिये स्थिति में सुधार तो हुआ, लेकिन अब भी शोषण के खिलाफ संघर्ष जारी है, यह इस बात को पुष्ट करता है कि संघर्ष के जरिये श्रमिक अपने जीवन स्तर में कुछ सुधार जरूर प्राप्त कर सकते हैं किन्तु पूंजीवादी समाज को उखाड़ फेके बिना शोषाण से संपूर्ण मुक्ति संभव नहीं है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गौर करें तो हम पाते हैं कि श्रमिक वर्ग पर शोषण और तेज हुआ है पूंजीवादी व्यवस्था में जहां मुनाफा ही देश की अर्थव्यवस्था और विकास का पैमाना हो, वहां मजदूरों पर दमन और अत्याचार होना लाजिमी है क्योंकि मुनाफे के लिए इसी वर्ग पर आक्रमण उनके लिए जरूरी होता है। पूंजीवादी अमेरिका हो या तो फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड कहीं का भी हम उदाहरण लें तो यही निष्कर्ष निकलता है कि मजदूरों के सामाजिक/आर्थिक स्तर में गिरावट ही आई है। आज भी जीने लायक वेतन, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा के लिए मजदूर वर्ग केवल संघर्षरत हैं। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि इस दौरान मजदूर वर्ग और भी संगठित हुआ है। उनका संघर्ष और भी तेज हुआ है। सर्वहारा वर्ग की आवाज मुखर हुई है।

जहां तक राष्ट्रीय स्तर पर देश की वर्तमान परिस्थिति का अवलोकन करें तो हम देखते हैं कि आज देश बहुत ही जटिल दौर से गुजर रहा है न केवल श्रमिक वर्ग वर्तमान केन्द्र की सरकार से त्रस्त है बल्कि आम जनता, किसान, छात्र, महिलाएं, नौजवान, किसान सभी पीड़ित हैं। हर वर्ष 2 करोड़ रोजगार मुहैया कराने के वादे पर मोदी सरकार सत्ता पर काबिज हुई लेकिन वो वादा केवल जुमलों में बदल गये। रोजगार देना तो दूर की बात है जो रोजगार में हैं उन्हीं की नौकरी भी खतरे में है। उद्योग, कारखाने बंद हो रहे हैं, मजदूरों की छंटनी जारी है। नोटबंदी और जीएसटी ने देश की अर्थव्यवस्था को चौपट ही कर दिया है। किसान लगातार आत्महत्या कर रहा है क्योंकि उन्हें उनकी फसल का वाजिब मूल्य नहीं मिल रहा है। पेट्रोल, डीजल की कीमत में बेतहाशा वृद्धि हो रही है, इससे महंगाई में भी वृद्धि हो रही है। देश में शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति बद से बदतर हो रही है, लेकिन मोदी सरकार खामोश है। उन समस्याओं से देश की जनता का ध्यान भटकाने के लिए हिन्दू-मुस्लिम कार्ड, मंदिर-मस्जिद मुद्दा, देशभक्ति, देशद्रोही नारे को प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जबर्दस्त रूप से परोसा जा रहा है। राजनीति का स्तर अपने निम्न स्तर पर चल रहा है। सरकार से प्रश्न पूछना गुनाह है, सरकार की नीतियों की आलोचना करना देशद्रोह की संज्ञा दी जा सकती है। अगर सरकार या उसके नुमाइंदे कोई जवाब देते है तो हर

मसले को पिछली सरकार से या फिर नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल तक जोड़ने से गुरेज नहीं कर रहे हैं। कठुवा हो, उन्नाव, सूरत हो या दिल्ली, कवर्धा हो या बेमेतरा देश के अनेक हिस्सों में महिलाओं और बच्चियों से रेप और हिंसा की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं, इससे न केवल मानवता शर्मसार हुई है वरन् इन जघन्य, अमानवीय कृत्य के लिए जिम्मेदारों को सजा की बजाये उन्हें राजनैतिक संरक्षण से भी देश, दुनिया के स्तर पर शर्मसार हुआ है। इन घटनाओं को भी सांप्रदायिक चश्मे से बांटने की घृणित कोशिशें की जा रही हैं , जिसे कतई मंजूर नहीं किया जा सकता। इसलिए हमें इन सभी मोर्चों पर भी संघर्ष को मजबूत करना होगा।

राष्ट्रीयकृत बीमा उद्योग पर निगाह डालें तो देश की अर्थव्यवस्था की हालत कमजोर होने के बावजूद भारतीय जीवन बीमा निगम एवं आम बीमा निगम ने वर्ष दर वर्ष तरक्की ही की है और निजी बीमा कंपनियों से मुकाबला करते हुए आज भी नंबर एक स्थान पर कायम है। लेकिन बीमा कर्मचारियों को एक तरफ उन्हें इस संस्था को बचाने की लड़ाई लड़नी है तो दूसरी तरफ चार्टर के लिए संघर्ष करना है। 9 माह गुजर जाने के बाद भी प्रबंधन की ओर से बातचीत के लिए कोई प्रस्ताव नहीं मिला है। इस वजह से एआईआईईए ने उद्योग के अन्य संगठनों को एकजुट कर 1 घंटे की बहिर्गमन हड़ताल 28 मार्च 2018 को आहूत की, जो जबर्दस्त रूप से सफल हुई। भविष्य में और भी संगठित होकर संघर्ष की आवश्यकता है। वेतन पुनर्निर्धारण के अलावा 1995 पेंशन योजना के लिए अंतिम विकल्प के लिए संघर्ष की आवश्यकता है। यह लड़ाई केवल उद्योग की लड़ाई नहीं है बल्कि यह एक राजनैतिक लड़ाई है इसलिए बीमा कर्मचारियों को मजबूती के साथ लामबंद होने की आवश्यकता है।

बीमा उद्योग में ऐतिहासिक तरक्की की बावजूद कर्मचारियों की संख्या दिन ब दिन कम होते जा रही है। लंबे समय से नई भर्ती के लिए प्रबंधन पर दबाव बनाने के बावजूद यह प्रक्रिया अब तक शुरू नहीं हो पाई है। बीमा कर्मचारियों के सामने यह भी एक चुनौती है। हर चुनौती को स्वीकार करते हुए बीमा कर्मचारियों को संघर्ष के मैदान में आना ही पड़ेगा। जरूरत पड़ी तो हमें आम जनता के बीच में भी जाना पड़ेगा। राजनैतिक संघर्ष के लिए अपने आपको वैचारिक रूप से सुदृढ़ करते हुए अभियान में जाना पड़ेगा क्योंकि संघर्ष के बिना और कोई विकल्प हमारे पास नहीं है। मई दिवस के शहीद हमें इसी संघर्ष को आगे बढ़ाने और धर्म, जाति, भाषा से परे एक इंसान के रूप में एक इंसान का दूसरे इंसान द्वारा शोषण से मुक्त शोषणहीन समाज के निर्माण के संघर्ष हेतु अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने की प्रेरणा देते हैं।

अंत में पुन: एक बार श्रमिक दिवस के उपलक्ष्य में समस्त बीमा कर्मचारियों, श्रमिक वर्ग को असंख्य शुभकामनाएं

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ...

आपका साथी

(डी.आर. महापात्र)

महासचिव

मई दिवस के अमर शहीद अमर रहें

इंकलाब जिंदाबाद

दुनिया के मजदूर एक हों